ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये। अथर्ववेद 613/3
सब सुखों के दाता परमेश्वर ! जगत निर्माता प्रभो! हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पा सकें। O God ! The bestower of happiness and prosperity, Creator of the world ! make us so capable that we way attain all that we aspire for.

वर्ष 37, अंक 16 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 10 मार्च, 2014 से रविवार 16 मार्च, 2014
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 190 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org\aryasandesh

### कश्यप वेद रिसर्च फाउंडेशन के तत्त्वावधान में केरल के कोझीकोड में वृदह सोमयाग सम्पन्न

## केरल में वैदिक संस्कृति की गूंज : साढे 13 लाख लोगों ने भाग लिया सोमयाग में

### केरल में ढाई करोड़ की लागत से बनेगा महाशय धर्मपाल एम.डी.एच. वेद रिसर्च फाउंडेशन : भूमि चिह्नित - शीघ्र होगा शिलान्यास

**जीवन में पहली बार इस प्रकार की श्रद्धा देखने का मिली** – महाशय धर्मपाल

**पंच महायज्ञ, वेद, गायत्री ही मानव जीवन की सफलता का द्वार** – आचार्य एम. आर. राजेश

### केरल के सभी विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक स्थलों पर महर्षि दयानन्दकृत वेद भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद स्थापित किया जाएगा – धर्मपाल आर्य

सृष्टि के उत्पत्ति के समय ही मानव के कर्त्तव्यों में यज्ञ का विधान किया गया है। वेदो में तो कहा भी गया है :- यज्ञो वै श्रेष्ठतमम् कर्म उसी परम्परा का सफल निर्वहन करते हुए कश्यप वेद फांउडेशन के द्वारा कोझी कोड, केरल में सामयज्ञ का आयोजन 13 से 19 फरवरी 2014 के बीच किया गया, जिसमे साढे तेरह लाख से ज्यादा लोगों ने भाग लिया। इस सामयज्ञ में केरल के हर कोने से वैदिक धर्म के अनुयायियों ने श्रद्धापूर्वक अपनी आहुति दी। आयोजित यज्ञ को देखकर महाशय धर्मपाल ने कहा कि जीवन में पहली बार लोगो में इतनी अद्भुत श्रद्धा देख रहे है। वे यज्ञ के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। कुछ समय पूर्व कालीकट में ही जब 1500 याज्ञिक महानुभावों ने सामूहिक यज्ञ का आयोजन किया था उसे देखते ही महाशय धर्मपाल जी ने यह मन बनाया था कि इस स्थान पर अवश्य ही जाना है। उन्होंने इस कार्यक्रम के समापन पर आने की स्वीकृति प्रदान की और वहां जाकर उन्होंने जो दृश्य देखा उसे देखकर उन्होंने यह भावना व्यक्त की कि यदि वे आज यहां नहीं आते तो शायद एक बड़ा मनमोहक दृश्य देखने से जीवन में वे वंचित रह जाते। उनके साथ सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल जी, दक्षिण भारत के प्रभारी एवं सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री राधाकृष्ण वर्मा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उप प्रधान

– शेष चित्रमय झांकी एवं समाचार पृष्ठ 5 एवं 7 पर

**"सभी महानुभावों का एक स्वर में यह कहना था कि इतने लम्बे सामाजिक जीवन में ऐसा दृश्य नहीं देखा।"**

**केरल के प्रत्येक हिस्से से वैदिक धर्म के अनुयायियों ने श्रद्धापूर्वक दी सोमयाग में अपनी आहुति**

(ऊपर) सोमयाग का विहंगम दृश्य। (नीचे-बाएं) सोमयाग में आहुति देने के लिए लगी लम्बी कतारों में खड़े श्रद्धालुओं से मिलते महाशय जी।(दाएं) सोमयाग पूर्णाहुति के दृश्य को देखते महाशय जी के साथ हर्षाविभोर होकर तालियां बजाते श्रद्धालुजन।

### महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के बोध दिवस शिवरात्रि के अवसर पर ऋषि मेला सम्पन्न

## वैचारिक क्रान्ति की लौ जला स्वामी दयानन्द सरस्वती ने दिखलाई सही राह – महाशय धर्मपाल

स्वामी दयानन्द सरस्वती आधुनिक काल में महान समाज सुधारक एवं स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रदूत थे। स्वामी जी पहले ऐसे व्यक्ति हुए हैं जिन्होंने ने स्वराज शब्द का उद्घोष किया। जिनसे प्रेरणा लेकर लाखों वीरों ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया और भारत को आज़ादी दिलवाई । उन्होंने भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए वेदों की ओर लौटों का नारा दिया। उनकी शिक्षायें आज के युग में भी उतनी ही प्रासांगिक है। ये उद्गार महाशय धर्मपाल, प्रधान आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली ने रामलीला मैदान में स्वामी दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित विशाल ऋषि मेला खेल एवं सांस्कृतिक प्रतियागिताएं व सार्वजनिक सभा में कहें। ज्ञात रहें स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म वर्ष 1824 में फाल्गुन कृष्ण दशमी के दिन गुजरात के टंकारा नामक स्थान पर हुआ और उन्हें शिवरात्रि के दिन बोध हुआ था।

– चित्रमय झांकी एवं समाचार शेष पृष्ठ 4 पर

वेद-स्वाध्याय

# कुवित् सोमस्यापामिति

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

**हन्ताहं पृथिवीमिमां नि दधानीहं वेह वा! कुवित्सोमस्यापामिति।।।। ऋग्वेद 10/119/9**

**अर्थ**—*(हन्त)* अरे *(अहम्)* मैं *(इमाम्)* इस *(पृथिवीम्)* पार्थिव शरीर को *(इह वा)* यहीं इस लोक में या इस योगभूमि में *(इह वा)* अथवा मोक्ष, परलोक में *(निदधानि)* रखूँ क्योंकि मैंने *(सोमस्य)* परमात्मा के आनन्द रस का कुवित् *(अपामिति)* बहुत पान किया है।

औषध, वीर्य और परोपकार सोम के तीन अर्थ हैं। ऋत्विक् लोग यज्ञों में जिस सोमरस का पान करते हैं, वह एक जड़ी-बूटी है जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है। जो आदित्य ब्रह्मचारी यत्नपूर्वक वीर्य-रक्षण, वेद-अध्ययन और ईश्वर-चिन्तन करता है वह भी सोमपायी है और ईश्वर के भक्तिरस का पान करने वाला साधक भी सोमपा है। ये तीनों सोम के अर्थ एक-दूसरे से सम्बन्धित हैं और इनकी रक्षा करने वाला ही वास्तविक ब्रह्मचारी है। जिसने अपनी जीवन ऊर्जा को विचाराग्नि का ईंधन बना परमात्मा के ध्यान में लगा दिया है, पूर्ण ब्रह्मचर्य उसी को मानना चाहिये। इसी का नाम ऊर्ध्वरेता है, और बिना ऊर्ध्वरेता हुये प्राणशक्ति [कुण्डलिनी] का जागरण नहीं होता। जो यह दावा करते हैं कि मेरी कुण्डलिनी जाग्रत हो गई है, वस्तुतः वे प्राणोत्थान को ही कुण्डलिनी मान बैठे हैं। प्राण का उत्थान कुण्डलिनी जागरण से पहले होने वाली क्रिया है। जैसे किसी सम्मेलन में मुख्य नेता या राजा के आने से पहले छोटे अधिकारी, कार्यकर्त्ता और चतुर्थ श्रेणी के लोग प्रबन्ध व्यवस्था के लिये आते हैं, वैसे ही प्राणोत्थान अथवा किसी सिद्धि का प्रकट होना कुण्डलिनी जागरण से पहले की क्रिया है।

मन्त्र में साधक की जिस अवस्था का वर्णन किया है और इस सूक्त में आये पहले मन्त्रों में जो भाव है वह जाग्रत कुण्डलिनी शक्ति वाले साधक में घटित होने वाली अनुभूतियों का वर्णन प्रतीत होता है। यही स्थिति ध्यानयोगी की होती है। 'योगदर्शन' के तृतीय पाद में जिन विभूतियों का वर्णन किया है, उनमें से कुछों का वर्णन इस सूक्त में आया है। मन्त्रों के अनुशीलन से यह समानता देखी जा सकती है।

**1. इति वा इति मे मनो गामश्वं सनुयामिति। कुवित्सोमस्यापामिति।**

*ऋ०10/119/1*

मुझे ईश्वर की भक्ति में इतना आनन्द आया कि मैं गाय, घोड़े और सारी सम्पत्ति को दान कर दूँ और ईश्वर भक्ति में ही लगा रहूँ। तुलना—**अपरिग्रह स्थैर्ये जन्मकथन्ता सम्बोधः।** (योग० २.३९) अपरिग्रह की स्थिरता हो जाने पर जन्म और जन्म के कारणों का बोध हो जाता है और आत्म साक्षात्कार की इच्छा जाग्रत हो जाती है। सांसारिक पदार्थ उसे तुच्छ लगने लगते हैं।

**2. प्र वाताइव दोधत उन्मा पीता अयंसत। कुवित्सोमस्यापामिति।**

*ऋ०10/119/2*

बहुत समय तक ध्यान-साधना करने से मेरी प्राणशक्ति का उत्थान हो गया है और शरीर में कम्पन आदि क्रियायें प्रारम्भ हो गई हैं और मेरे प्राण ऊर्ध्वगति को प्राप्त हो रहे हैं।

**3. उन्मा पीता अयंसत रथमश्वाइ वाशवः। कुवित्सोमस्यापामिति।**

*ऋ०10/119/3*

जैसे घोड़े किसी रथ को ले चलते हैं, जैसे रानी मक्खी का अनुगमन मधुमक्खियाँ करती हैं वैसे ही मेरी इन्द्रियों का वृत्ति-निरोध हो मैं एकाग्र हो गया हूँ। तुलना **स्वविषयासंप्रयोगे चित्त स्वरूपानुकारइवेन्द्रियाणां प्रत्याहारः।** (योग० २.५४) इन्द्रियों का विषयों से पृथक् हो मन के अनुरूप हो जाना 'प्रत्याहार' है। इससे मन शान्त हो जाता है।

**4. उप मा मतिरस्थित वाश्रा पुत्रमिव प्रियम्। कुवित्सोमस्यापामिति।**

*ऋ०10/119/4*

जैसे गाय रम्भाती हुई अपने बछड़े की ओर दौड़ी जाती है वैसे ही मेरी बुद्धि, चित्तवृत्ति उस परमप्रिय के ध्यान में स्थिर हो गई है। तुलना **समाधिसिद्धिरीश्वर प्रणिधानात्।** (योग २.४५) ईश्वर-प्रणिधान से बहुत शीघ्र समाधि-लाभ होता है।

**5. नहि मे अक्षिपज्जनाच्छान्त्सुः पञ्च कृष्टयः। कुवित्सोमस्यापामिति।**

*ऋ०10/119/6*

मेरी पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ अब मुझे अपने विषयों की ओर आकर्षित नहीं कर रही हैं। वे मेरी अनुगामिनी बन गई हैं क्योंकि मैंने ईश्वर-भक्ति के आनन्द रस का अत्यधिक पान किया है। तुलना- **ततः परमावश्यतेन्द्रियाणाम्** (योग० २.५५) प्रत्याहार की स्थिति होने पर इन्द्रियाँ वश में हो जाती हैं और जितेन्द्रिय साधक उनको जहाँ ध्यानावस्थित करना चाहे वहाँ कर सकता है।

**6. नहि मे रोदसी उभे अन्यं पक्षं चन प्रति। कुवित्सोमस्यापामिति।**

*ऋ०10/119/7*

अब चाहे यह द्युलोक और पृथिवी के समस्त मानव एक पक्ष में हो जायें तब भी मेरा मार्ग नहीं रोक सकते क्योंकि मैं उस परमात्मा के आनन्द में निमग्न हो गया हूँ। पाठकगण! ईश्वरोपासना, ध्यान समाधि से जो सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं उनका यत्किञ्चिद् वर्णन इन मन्त्रों में किया है। इस पृष्ठभूमि में अगले मन्त्र को समझना सरल होगा—

**हन्ताहं पृथिवीमिमां नि दधानीह वेह वा। कुवित्सोमस्यापामिति।**

*ऋ०10/119/9*

इस मन्त्र के दो अर्थ किये जा सकते हैं—

१. मैंने जो ईश्वर की उपासना की है उससे मुझे विवेक-ज्ञान हो गया है। मैंने यह ज्ञान लिया है कि अज्ञान के कारण द्रष्टा आत्मा दर्शन अर्थात् बुद्धि में घटित दृश्यों को अपने में जान सुखी-दुखी हो रहा है। यह स्वामी होते हुये भी इन इन्द्रियों के विषयों एवं इन्हें दिखाने वाले मन, बुद्धि का दास हो रहा है। अब मेरा इन से कोई लेना-देना नहीं है। अब यह शरीर भी मुझे भार प्रतीत हो रहा है। मैं अपने स्वरूप में स्थित हुआ ज्ञानस्वरूप परमेश्वर के आनन्द में सराबोर हो गया हूँ। यह शरीर रहे या न रहे इसकी मुझे चिन्ता नहीं।

२. 'अहो! मैंने सोमरस का जीभर कर पान किया है। मुझे बताओ इस पृथिवी को उठाकर इधर रख दूं या इधर।' पृथिवी में 'तत्स्थ्य-उपाधि' जाननी चाहिये पृथिवी अर्थात् उस पर स्थित लोगों की जीवन सरिता का प्रवाह मोड़ दूसरी ओर प्रवाहित करने का सामर्थ्य योगी में आ जाता है। महात्मा बुद्ध, शंकराचार्य, स्वामी दयानन्द जी इसी कोटि के महामानव थे जिन्होंने अपने समय में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर दिखाया। ऐसा पुरुषार्थ और साहस वही कर सकता है जिसकी आत्मा सबल और ईश्वर पर पूरा विश्वास हो। ईश्वर-भक्ति से आत्मा का बल इतना बढ़ जाता है कि व्यक्ति पहाड़ जैसी आपत्ति में भी अपने कर्त्तव्यपथ से विचलित नहीं होता। इसके अतिरिक्त वह सभी प्राणियों में अपने जैसी आत्मा मान यह विचार करता है कि जैसे सुख-दुःख की अनुभूति मुझे होती है, वैसी ही दूसरों को भी, फिर क्यों न मैं सबकी उन्नति के लिये इसे ईश्वराज्ञा मान आगे कदम बढाऊँ। - क्रमशः

## "शत हस्त समाहर सहस्त्र हस्त सं किर"
## "सौ हाथों से कमाओ हजार हाथों से दान करो"

**पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य**

### आर्यजन दिल खोलकर दान दें

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर उत्तराखण्ड बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ दान की अपील पर प्राप्त दान की सूची**

**गतांक से आगे -**

**आर्यसमाज दरियागंज द्वारा एकत्र राशि**

| | | |
|---|---|---|
| 910 | श्रीमती इन्दिरा बपोदिया | 2100 |
| 911 | श्री सत्येन्द्र गुप्ता | 1100 |
| 912 | श्री हरिओम अग्रवाल | 1100 |
| 913 | श्री श्रीदत्त यादव | 1100 |
| 914 | श्री संजय शर्मा | 1100 |
| 915 | श्री भैरव दत्त देवताला | 1100 |
| 916 | श्री सम्राट गुप्ता | 500 |
| 917 | श्रीमती अंजली मेहरा | 500 |
| 918 | श्रीमती पुष्पा वर्मा | 500 |
| 919 | श्री गौरव पुरी | 250 |
| 920 | श्रीमती पूनम जैन | 250 |
| 921 | श्रीमती मंजू गुप्ता | 250 |
| 922 | श्री महेन्द्र पी. झा | 250 |
| 923 | श्री वी. पी. कात्याल | 250 |
| 924 | श्री अजय गुप्ता | 200 |
| 925 | आचार्य अजय शर्मा | 100 |
| 926 | श्री रणधीर सिंह | 50 |
| 927 | श्री एस.एस. मिश्रा | 50 |

- क्रमशः

**इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम इसी प्रकार आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। - *महामन्त्री***

## कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के लिए दान देने वाले महानुभावों की सूची

**गतांक से आगे -**

**द. दिल्ली वेद प्र. मंडल द्वारा एकत्र दान राशि**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | सर्वश्री गोविन्दलाल नागपाल | 2000 |
| 2. | चतर सिंह नागर | 1000 |
| 3. | रविदेव गुप्ता | 1000 |
| 4. | श्रीमती प्रकाशवती | 1000 |
| 5. | रामबाबू गुप्ता | 1000 |
| 6. | श्रीमती सुशीला गुप्ता | 1000 |
| 7. | संजय खण्डेलवाल | 1000 |
| 8. | श्रीमती अनुराधा | 1000 |
| 9. | विजय गुप्त | 1100 |
| 10. | ओमवीर सिंह | 1100 |
| 11. | आर्यसमाज लाजपत नगर | 2800 |
| 12. | गुप्तदान | 1100 |
| 13. | आर्यसमाज संगम विहार | 500 |
| 14. | श्रीमती सन्तोष सेठ | 250 |
| 15. | आर्यसमाज जंगपुरा विस्तार | 1000 |
| 16. | आर्यसमाज अमर कालोनी | 2100 |
| 17. | श्रीमती अर्चना पुष्करणा | 500 |
| 18. | आर्यसमाज जोर बाग | 5000 |
| 19. | आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2 | 10000 |
| 20. | आर्यसमाज मालवीय नगर | 5000 |
| 21. | आर्यसमाज साकेत | 5000 |
| | **श्रीमती सुषमा आर्या** | **6000** |

- क्रमशः

आप भी कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के पुनरुद्धार में सहयोगी बनें और दिल खोलकर दान दें ताकि हम सब मिलकर गुरुकुल को आत्मनिर्भर बना सकें। कृपया अपनी सहयोग राशि चैक/ड्राफ्ट/मनिआर्डर के रूप में **'कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, देहरादून'** के नाम भेजें। यदि आप अपनी दानराशि पर **आयकर छूट** चाहते हैं तो कृपया दानराशि **'सहायक मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार'** के नाम भेजें। कृपया चैक के पीछे 'कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून' हेतु सहयोग अवश्य लिखें।

आर्य पर्व होली पर विशेष

# होली का पर्व और वैदिक धर्म

फाल्गुन मास की पूर्णिमा को मनाये जाने वाले पर्व होली का प्राचीन नाम ''वासन्ती नवसस्येष्टि'' है। यह उत्सव-पर्व वसन्त ऋतु के आगमन पर मनाया जाता है। चैत्र कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा को एक दूसरे के चेहरे पर रंग लगाकर या जल में घुले हुए रंग को एक दूसरे पर डाल कर तथा परस्पर मिष्ठान्न का आदान-प्रदान कर इस पर्व को मनाने की परम्परा चली आ रही है। यह भी कहा जाता है कि इस पर्व के दिन पुराने मतभेदों, वैमनस्य व शत्रुता आदि को भुला कर नये मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों का आरम्भ किया जाता है। कुछ-कुछ कहीं आशानुरूप होता भी है परन्तु इसका पूर्णत: सफल होना संदिग्ध है। सर्वत्र रंग-बिरंगे फूलों के खिले होने से वातावरण भी रंग-तरंगमय या रंगीन सा होता है।

इस कारण वासन्ती नवसस्येष्टि, अपर नाम होली, को रंगों के पर्व की उपमा दी जा सकती है। वसन्त ऋतु भारत में होने वाली 6 ऋतुओं का राजा है। वसन्त ऋतु में शीत ऋतु का अवसान हो जाता है और वायुमण्डल शीतोष्ण जलवायु वाला होता है। वृक्षों में हरियाली सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है और नाना प्रकार के फूल व हरी पत्तियां सारी पृथिवी पर सर्वत्र दिखाई देती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति ने किसी विशेष अवसर पर किसी महनीय उद्देश्य से अपना श्रृंगार किया है। यह श्रृंगार वसन्त ऋतु व चैत्र के महीने से आरम्भ होने वाले नवसंवत्सर का स्वागत करने के लिए ही किया जा रहा प्रतीत होता है। टेसू के वृक्षों पर फूलों से लदी हुई डालियां शोभायमान होकर कहती हैं कि तुम भी हमारा अनुसरण कर अपने जीवन को विभिन्न सात्विक रंगों से रंग कर नवीन आभा से शोभायमान हो। इस वातावरण में मन उमंगों से भरा होता है। प्रकृति के इस स्वरूप को देखकर सात्विक मन वाला व्यक्ति कह उठता है कि हे ईश्वर तुम महान हो। नाना प्रकार के फलों, पत्तियों व वनस्पतियों से अलंकृत सारी सृष्टि को देखकर भी यदि मनुष्य इन सबके रचनाकार को अनुभव वा प्रत्यक्ष नहीं करता तो एक प्रकार से उसका ऐसा होना जड़-बुद्धि होने का प्रमाण है। भिन्न-भिन्न रंगों के पुष्पों की छटा व सुगन्धि वातावरण में फैल कर सन्देश दे रही है कि तुम भी भिन्न-भिन्न रंगों व सुगन्धि अर्थात् विविध गुणों को जीवन में धारण करो, जो कि आकर्षक हो तथा जिससे जीवन पुष्पों की भांति प्रसन्न, खिला-खिला तथा दूसरों को भी आकर्षित व प्रेरणा देने वाला हो। यह प्रकृति के विभिन्न रंग ईश्वर में से ही तो प्रस्फुटित हो रहे हैं जिससे अनुमान होता है कि सात्विक व्यक्ति को भी निरा एकान्त सेवन वाला न होकर समाज के साथ मिल कर अपनी प्रसन्नता को सात्विक रंगों के द्वारा अभिव्यक्त करना चाहिये। ऐसे ही कुछ मनोभावों को होली के फाग वाले दिन लोग क्रियान्वित करते हुए दिखते हैं। होता यह है कि त्यौहार के दिन जिस व्यक्ति को जो व्यसन होता है, वह उसका सेवन कर स्वयं को प्रसन्न करता है। आजकल होली के अवसर पर मदिरापान का कृत्य कुछ इसी प्रकार का लगता है। मदिरापान जीवन को विवेकहीन बना कर पतन की ओर ले जाने वाला पेय है। इस प्रकार से होली मनाने का वैदिक संस्कृति से अनभिज्ञ लोगों का यह अप्रशस्त तरीका है।

हम देखते हैं कि होली पर पूर्णिमा वाले दिन देर रात्रि को होली का दहन करते हैं। बहुत सारी लकड़ियों को एक स्थान पर एकत्रित कर अवैदिक विधि से पूजा-अर्चना कर उसमें अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी जाती है। कुछ समय तक वह लकड़ियां जलने के बाद बुझ जाती हैं। लोग यह समझते हैं कि उन्होंने कोई बहुत बड़ा धार्मिक कृत्य कर लिया है जबकि ऐसा नहीं है। होली को इस रूप में जलाना किसी प्राचीन लुप्त प्रथा की ओर संकेत करता है। सृष्टि के आरम्भ से ही वेदों की प्रेरणा के अनुसार अग्निहोत्र-यज्ञ करने की प्रथा हमारे देश में रही है। आज भी यह यज्ञ आर्य समाज मन्दिरों व आर्यों के घरों में नियमित रूप से किये जाते हैं। पूर्णिमा व अमावस्या के दिन पक्षेष्टि यज्ञ करने का प्राचीन शास्त्रों में विधान है जिन्हें दर्श व पौर्णमास नामों से जाना जाता है। जो कार्य परिवार की इकाई के रूप में किया जाता है वह स्वाभाविक रूप से छोटा होता है तथा जो सामूहिक स्तर पर किया जायेगा वह वृहतस्वरूप वाला होगा जिससे उसका प्रभाव परिमाण के अनुरूप होगा। होली का दिन पूर्णिमा का दिन होता है। फाल्गुन के महीने में इस दिन किसानों के खेतों में गेहूं की फसल लहलहा रही होती है। गेहूं की बालियों में गेहूं के दाने पूरी तरह बन चुके हैं, अब उनको सूर्य की धूप चाहिये जिससे वह पक सकें। इन गेहूं की बालियों वा इनके भुने हुए दानों को होला कहते हैं। कुछ दिनों बाद ही वह फसल पक कर तैयार हो जायेगी और उसे काटकर किसान अपने घर के खलिहानों में संभालेगें। इस संग्रहित अन्न से पूरे वर्ष भर तक उनका परिवार व देशवासी उपभोग करेगें जिससे सबको बल, शक्ति, ऊर्जा, आयु, सुख, प्रसन्नता व आनन्द आदि की उपलब्धि होगी। गेहूं की बालियों अथवा होला को पूर्णिमा के यज्ञ में डालने से वह अग्नि देवता द्वारा संसार के समस्त प्राणियों व देवताओं को पहुंच जाती हैं और देवताओं का भाग उन्हें देने के बाद कृषक व अन्य लोग उसका उपयोग व उपभोग करने के लिए पात्र बन जाते हैं। होली का पौराणिक विधान उसी नव-अन्न-इष्टि यज्ञ की स्मृति को ताजा करता है। इसी कारण प्राचीन काल में इस पर्व को नवसस्येष्टि कहा जाता था। आज के दिन होना तो यह चाहिये कि होली का स्वरूप सुधारा जाये। होली रात्रि में न जलाकर दिन में 10-11 बजे के बीच गांव-मुहल्ला के सभी लोगों की उपस्थिति में एक स्थान पर वृहत्त यज्ञ के अनुष्ठान के रूप में आयोजित की जाये। कोई वैदिक विद्वान जो यज्ञ के विशेषज्ञ हों, उस यज्ञ को करायें। उसका महत्व उपस्थित जनता को विदित करायें और यज्ञ के अनन्तर सभी स्त्री-पुरुष मिलकर एक दूसरे को शुभकामनायें दें और अपनी ओर से मिष्ठान्न वितरित करें। वहां एक बड़ी दावत या लंगर भी होली या नव सस्येष्टि पर्व के उपलक्ष्य में किया जा सकता है। लोकाचार व प्रचलित व्यवस्था के अनुसार यदि चाहे तो

- शेष पृष्ठ 6 पर

## होली मिलन

जो होली सो होली भुलादो उसे,
आज मिलने मिलाने का त्यौहार है।
त्याग दो छल कपट द्वेष की भावना,
प्रेम गंगा बहाने का त्यौहार है।।

न कीचड़ उछालो न गाली बको,
यह कुप्रथा बन्द करने में आनन्द है।
स्वर्ग सम शुद्ध वातावरण हो यहां,
आज होली मनाने का त्यौहार है।।

ये हीरे से बढ़कर है इन्सा का तन,
व्यर्थ में ना गवाना जरा ध्यान दो।
बांट दो ज्ञान गीता का श्रीकृष्ण सम,
प्रेमबन्सी बजाने का त्यौहार है।।

लोग श्रद्धा से जिसका करें अनुकरण,
ऐसा आदर्श जीवन बनाओ सभी।
पाप अन्याय उत्पात बढ़ने न दें,
विघ्न संकट मिटाने का त्यौहार है।।

कर रहे जो अनाचार पीकर यहां,
ये अहंकार मदिरा भरी प्यालियां।
ये सफल होगी होली तभी बन्धुओं,
वेदाऽमृत पिलाने का त्यौहार है।।

ये विरह ये मिलन काव्य श्रृंगार रस,
गीत भद्दे व गन्दे सुनाई न दें।
डालदें जो कि मुर्दों में भी जान को,
गीत ऐसे सुनाने का त्यौहार है।।

सभी मनुष्यों में हो प्रेम वातावरण,
सभी भाई-भाई न झूठा कथन।
'राघव' हो संगठित करे हृदय मिलन,
जीवन ज्योति जगाने का त्यौहार है।।

**- स्व. स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती**
**भूतपूर्व अधिष्ठाता, वेद प्रचार विभाग,**
**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**

***सृष्टि के आरम्भ से ही वेदों की प्रेरणा के अनुसार अग्निहोत्र-यज्ञ करने की प्रथा हमारे देश में रही है। आज भी यह यज्ञ आर्य समाज मन्दिरों व आर्यों के घरों में नियमित रूप से किये जाते हैं। पूर्णिमा व अमावस्या के दिन पक्षेष्टि यज्ञ करने का प्राचीन शास्त्रों में विधान है जिन्हें दर्श व पौर्णमास नामों से जाना जाता है। जो कार्य परिवार की इकाई के रूप में किया जाता है वह स्वाभाविक रूप से छोटा होता है तथा जो सामूहिक स्तर पर किया जायेगा वह वृहतस्वरूप वाला होगा जिससे उसका प्रभाव परिमाण के अनुरूप होगा। होली का दिन पूर्णिमा का दिन होता है। फाल्गुन के महीने में इस दिन किसानों के खेतों में गेहूं की फसल लहलहा रही होती है। गेहूं की बालियों में गेहूं के दाने पूरी तरह बन चुके हैं, अब उनको सूर्य की धूप चाहिये जिससे वह पक सकें। इन गेहूं की बालियों वा इनके भुने हुए दानों को होला कहते हैं। कुछ दिनों बाद ही वह फसल पक कर तैयार हो जायेगी और उसे काटकर किसान अपने घर के खलिहानों में संभालेगें। इस संग्रहीत अन्न से पूरे वर्ष भर तक उनका परिवार व देशवासी उपभोग करेगें जिससे सबको बल, शक्ति, ऊर्जा, आयु, सुख, प्रसन्नता व आनन्द आदि की उपलब्धि होगी। गेहूं की बालियों अथवा होला को पूर्णिमा के यज्ञ में डालने से वह अग्नि देवता द्वारा संसार के समस्त प्राणियों व देवताओं को पहुंच जाती हैं और देवताओं का भाग उन्हें देने के बाद कृषक व अन्य लोग उसका उपयोग व उपभोग करने के लिए पात्र बन जाते हैं। होली का पौराणिक विधान उसी नव-अन्न-इष्टि यज्ञ की स्मृति को ताजा करता है। इसी कारण प्राचीन काल में इस पर्व को नवसस्येष्टि कहा जाता था। आज के दिन होना तो यह चाहिये कि होली का स्वरूप सुधारा जाये। होली रात्रि में न जलाकर दिन में 10-11 बजे के बीच गांव-मुहल्ला के सभी लोगों की उपस्थिति में एक स्थान पर वृहत्त यज्ञ के अनुष्ठान के रूप में आयोजित की जाये। कोई वैदिक विद्वान जो यज्ञ के विशेषज्ञ हों, उस यज्ञ को करायें। उसका महत्त्व उपस्थित जनता को विदित करायें और यज्ञ के अनन्तर सभी स्त्री-पुरुष मिलकर एक दूसरे को शुभकामनायें दें और अपनी ओर से मिष्ठान्न वितरित करें। वहां एक बड़ी दावत या लंगर भी होली या नव सस्येष्टि पर्व के उपलक्ष्य में किया जा सकता है। लोकाचार व प्रचलित व्यवस्था के अनुसार यदि चाहे तो प्राकृतिक रंग का तिलक-टीका चेहरे पर लगाकर शुभ कामनाओं का परस्पर आदान-प्रदान भी किया जा सकता है।***

## आओ मनाएं ऐसे होली

गली-गली और नगर-नगर में आर्यों की बन निकले टोली।
सबको वैदिक रंग में रंगकर आओ हम सब खेलें होली।।

खुश्बू के शीतल चंदन से, हर मस्तक पर रंगकर रोली।
प्यार प्रीति की रीति निभाकर, चलें साथ बनकर हमजोली।।

घृणा, द्वेष, नफरत को मिटाकर, रूठों को भी आज मनाकर।
बाहों में भर बाँह मिलाकर, एक सूत्र से बाँधें मोली।।

नहीं उछालें कीचड़ पानी, इनसे तो होती है हानि।
टेसू के फूलों से खेलें, चेचक हैजा की यह गोली।।

विमल रंग में सब रंग जावें, कोई नहीं वंचित रह पायें।
घर-घर जाकर अलख जगाकर, ओ३म् नाम की जय हो बोली।।

हर घर के बनकर के सहरे, ओ३म् ध्वजा हर घर में फहरे।
बहे राष्टभक्ति की धारा, चलें पहन सतरंगी चोली।।

होली के इस पुण्य पर्व पर, आपस में दें शुभकामनाएं।
कड़वाहट सारी त्यज खाएं, गुझिया मीठी पूरन पोली।।

**- विमलेश बंसल, 329 द्वितीय तल, संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-110065**

प्रथम पृष्ठ का शेष

## महर्षि दयानन्द बोध दिवस.....

कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व कल्याण यज्ञ से हुआ। 'पाखण्ड व अंधविश्वास को मिटाने के लिए हमारा उत्तरदायित्व' विषय पर आयोजित गोष्ठी पर मुख्यवक्ता दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ब्र. राज सिंह आर्य ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने देश में फैले सामाजिक एवं धार्मिक आडम्बरों एवं रीति-रिवाज़ों का खण्डन किया। एक बार फिर उसी तरह के जनजागरण की आवश्यकता है। इसके लिए प्रत्येक आर्यजन को खुद से शुरुआत करनी होगी। स्वामी जी के जीवन से प्रेरणा लेकर आर्य समाज निरंतर सामाजिक उत्थान, नैतिक मूल्यों व शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत है। इस गोष्ठी में मुख्य अतिथि कीर्ति शर्मा थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव के उपलक्ष्य में खेल तथा भाषण प्रतियागिता का भी आयोजन किया गया। महाशय धर्मपाल जी की अध्यक्षता में आयोजित सार्वजनिक सभा में मुख्यातिथि राजेन्द्र गुप्ता व ठाकुर विक्रम सिंह विशिष्ट मुख्यातिथि थे। मुख्यवक्ता जेएनयू के असि. प्रोफेसर डॉ. सुधीर गुप्ता ने वर्तमान समय में आर्यसमाज के विस्तृत होते कार्यक्षेत्र व संस्कारों की आवश्यकता पर अपने विचार रखे। स्वामी दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव

- शेष पृष्ठ 8 पर

समारोह में उद्‌बोधन देते ब्र. राजसिंह आर्य, श्री गंगाशरण आर्य, संयोजक श्री सुरेन्द्र रैली, मुख्य वक्ता डॉ. सुधीर गुप्ता एवं विशिष्ट अतिथि ठा. विक्रम सिंह जी

डॉ. मेघश्याम वेदालंकार जी के ब्रह्मत्व में आयोजित यज्ञ में भाग ले यजमान एवं सुमधर भजन प्रस्तुत करते श्री बलराम आर्य जी एवं साथी

विद्वत् सम्मान : श्री एस.पी. सिंह जी, श्रीमती सरोज यादव जी, आचार्य रामचन्द्र शास्त्री। ठा. विक्रम सिंह जी को स्मृति चिह्न देते महाशय जी, श्री कीर्ति शर्मा व श्री राजीव आर्य

नव प्रकाशित पुस्तकों का विमोचन एवं इस अवसर पर आयोजित चोल प्रतियोगिताओं में भाग लेते आर्यजन।

प्रथम पृष्ठ का शेष

श्री धर्मपाल आर्य जी, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी, दक्षिण अफ्रीका से विशेष रूप से पधारे श्री दयानन्द शर्मा जी एवं एम.डी.एच. परिवार से श्री प्रेम कुमार अरोड़ा जी कालीकट पहुंचे थे।

"सभी महानुभावों का एक स्वर में यह कहना था कि इतने लम्बे सामाजिक जीवन में ऐसा दृश्य नहीं देखा।"

यज्ञ स्थल से लगभग दो किमी. दूर से यज्ञ स्थल पर पहुंचने वाले महानुभावों की लम्बी लाइन को देखकर सहज रूप से यह विश्वास करना कठिन हो गया कि ये सब महानुभाव यज्ञ में आहुति देने जा रहे हैं। किन्तु ज्यो-ज्यों यज्ञ स्थल के निकट पहुंचने लगे हमारे वाहनों का चलना कठिन होता चला गया और यज्ञ स्थल से 300 मीटर दूर आने पर तो मानों सारा ट्रेफिक जाम हो चुका हो। यदि हमारी गाड़ियों के साथ कार्यकर्तागण न होते और पुलिस की विशेष सहायता न होती तो यज्ञ स्थल पर पहुंचना कठिन सा हो जाता। यह दृश्य न तो रविवार का था न ही किसी अवकाश का। आने वालों में महिलाएं, बुजुर्ग, नौजवान, छोटे बच्चे अमीर-गरीब हर प्रकार के श्रद्धावान सम्मिलित थे। न कोई शोर न कोई विवाद, लाखों लोग लगातार आए चले जा रहे थे। समारोह स्थल पर पहुंचने से पूर्व सड़क के दोनों ओर हजारों की तादाद में लोगों ने

(ऊपर बाएं) सोमयाग के समापन समारोह के अवसर पर दीप प्रज्वलित करते महाशय धर्मपाल जी। साथ में हैं सर्वश्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी, विनय आर्य जी, दयानन्द शर्मा जी, प्रेम अरोड़ा जी, धर्मपाल आर्य जी एवं आचार्य एम. आर राजेश। (ऊपर दाएं) सोमयाग में मन्त्रोच्चार करते वेदपाठी एवं मंचस्थ अतिथिगण। (मध्य) महाशय धर्मपाल जी का पारम्परिक स्वागत करते आचार्य एम.आर. राजेश जी, साथ में हैं महामन्त्री श्री विनय आर्य जी। (नीचे) अपनी आहुति के लिए सामग्री एवं घृत लेती छोटी बालिका एवं अपनी बारी की प्रतिक्षा करते श्रद्धालुजन तथा व्यवस्था में लगे कार्यकर्तागण। समापन समारोह के अवसर पर श्रद्धालुओं से भरा यज्ञस्थल। किसी भी अप्रिय घटना से निपटनें के लिए मौके पर अग्निशमन गाड़ी की भी व्यवस्था की गई थी। - शेष पृष्ठ 7 पर

पृष्ठ 3 का शेष

प्राकृतिक रंग का तिलक-टीका चेहरे पर लगाकर शुभ कामनाओं का परस्पर आदान-प्रदान भी किया जा सकता है।

प्राचीन वर्ण व्यवस्था के अनुसार चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र का एक-एक पर्व है जिनके नाम क्रमश: श्रावणी या रक्षा-बन्धन, दशहरा या विजया दशमी, दीपावली या शारदीय नवसस्येष्टि एवं होली या वासन्ती नवसस्येष्टि हैं। हमारे यहां प्राचीन काल से ही यज्ञों की परम्परा रही है। प्रत्येक पूर्णिमा व अमावस्या को पक्षेष्टि यज्ञ किये जाते थे तथा आर्य समाज की स्थापना से यह पुन: प्रचलित हो गये हैं। गेहूं नयी फसल के दानों से पूर्णिमा के वृहत्त यज्ञों में आहुतियां देने से होली नाम सार्थक होता है। ऐसा ही प्राचीन काल में होता रहा था जिसका बिगड़ा हुआ रूप वर्तमान का होली का पर्व है। यद्यपि यह पर्व कृषकों, श्रमिकों व वैश्य वर्ण का है तथापि इसको सभी वर्णों व समुदायों के द्वारा मिलकर मनाये जाने से समाज में एक अच्छी भावना का उदय होता है। समय के साथ-साथ कुछ लोगों के साधन बहुत बढ़ गये हैं। अधिक प्रजाजन मध्यम श्रेणी व साधनहीन हैं। धनी हर कार्य में, दिखावें की अपनी कृत्रिम मानसिक प्रकृति व रूतबे के लिए, प्रभूत धन व्यय करते हैं। अन्य मध्यम व निम्न वर्ग वाले इनका अन्धानुकरण करते हैं। इस सबने व मध्यकालीन अज्ञान व अन्धकार ने पर्वों की मूल भावना को विस्मृत करा दिया है। गेहूं के दानों से युक्त बालियां समस्त मनुष्य समाज के लिए आवश्यक, अपरिहार्य व महत्त्वपूर्ण हैं। हमारा देह व शरीर अन्नमय है। अन्य सभी प्राणियों के शरीर भी अन्नमय हैं। इनका प्रतीक यदि सभी अन्नों में मुख्य गेहूं वा होला को मान लें तो कृषक व ईश्वर द्वारा उसका निर्माण व उत्पादन होने में तथा खेतों में फसल को लहलहाते देख कृषकों-श्रमिक-वैश्य बन्धुओं व प्रकारान्तर से सभी प्रजा-जनों को जो प्रसन्नता होती है उसको अभिव्यक्त करने के लिए वृहत्त यज्ञ रचाने व सबके द्वारा उसे मिलकर करने, उसमें नवान्न गेहूं के दानों होलकों की यज्ञ-द्रव्य के रूप में आहुतियां देने जिससे ईश्वर की कृपा से वह अन्न सभी देशवासियों की सुख-समृद्धि का आधार बने, यह भावना निहित दिखाई देती है।

एक बार रंगों के बारे में पुन: विचार कर इसमें निहित सन्देश को जानने का प्रयास करते हैं। सभी रंग ईश्वर के बनाये हुए हैं। इसकी भी जीवन में कुछ उपयोगिता अवश्य होगी अन्यथा ईश्वर इन्हें बनाता ही क्यों? यदि विचार करें तो जीवन में शैशव काल के बाद बाल्यावस्था आती है जब माता-पिता बालक-बालिका को गुरुकुल भेजकर उसे शिक्षा व संस्कार देने का प्रयास करते हैं। बाल्यावस्था के बाद युवावस्था आरम्भ होती है, यह भी जीवन का एक भाग या रंग है जब मनुष्य में शक्ति व उत्साह हिलोरें लेता है। जीवन की इस अवस्था में मनुष्य उपलब्धियां प्राप्त करता है। महर्षि दयानन्द भी 18 वर्ष की आयु में अपना घर, परिवार, गली-मोहल्ला, माता-पिता, भाई-बन्धु व मित्र-सखाओं को छोड़ कर संसार की सच्चाई व रहस्य को जानने के लिए तथा सृष्टिकर्ता को जानकर उसे प्राप्त करने, जिसे हम सच्चे शिव की खोज कहते हैं, निकले थे। इसके अतिरिक्त उनके मन में मृत्यु का डर भी भरा हुआ था जिससे वह बचना चाहते थे। इस डर पर विजय पाने के उपाय ढूंढ़ना भी उनका उद्देश्य था जिसमें वह सफल हुए। मृत्यु पर विजय पाने का प्रमाण उनकी स्वयं की मृत्यु का दृश्य है। हम देखते हैं कि विपरीत परिस्थितियों में हुई उनकी मृत्यु व उससे पूर्व के शारीरिक कष्ट उन्हें किंचित विचलित नहीं कर पाये थे। युवावस्था से पूर्व तथा युवावस्था का कुछ समय विद्यार्जन में लग जाता है। इसके बाद विवाह होता है और फिर व्यवसाय का चयन, सन्तति वृद्धि व सन्तानों की शिक्षा-दीक्षा के दायित्व होते हैं। युवावस्था में व्यक्ति अच्छे या बुरे, अपने स्वभावानुसार, ज्ञान, सामर्थ्य, अन्त:प्रेरणा आदि से प्रभावित होकर कार्य करता है। युवावस्था के बाद परिपक्वता आती है जो युवावस्था का सांध्यकाल होता है और इसके कुछ समय बाद वृद्धावस्था आरम्भ होती है। जीवन की विभिन्न अवस्थाओं का अपना-अपना महत्व व उपयोगिता है और इसमें नाना प्रकार के रंग होते हैं। रंग अर्थात् जीवन की भिन्न-भिन्न अवस्थायें। अन्य अवस्थाओं को छोड़कर यदि युवावस्था पर दृष्टिपात करें तो पाते हैं कि वह आज के युवा सब आधुनिकता के रंग में रंगे हैं जिसमें बुद्धि का उपयोग नाममात्र है। हमें लगता है कि कुछ थोड़ी सी बातें अच्छी हो सकती हैं। आधुनिक जीवन शैली हमें विनाश की ओर अधिक ले जा रही है परन्तु हमारे युवाओं में सोचने व समझने की अधिक क्षमता नहीं है। आजकल का सामाजिक व वैश्विक वातावरण भी अनुकूल न होकर प्रतिकूल है। हमें यहां विवेक से अपना मार्ग तय करना होगा। आज की हमारी युवापीढ़ी जो आधुनिकता की चकाचौंध से सम्मोहित हो रही है उसने वेद, वैदिक साहित्य, महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित और उनके सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ नहीं पढ़े हैं। यदि पढ़े होते तो फिर वह बुद्धि व ज्ञान की आंखें बन्द करके आधुनिकता को न अपनाते और अपना भला-बुरा समझ पाते। अत: होली का पर्व मनाते हुए हमें आत्म-चिन्तन कर अच्छे-बुरे में भेद कर भद्र या अच्छे को अपनाना होगा और अन्य अविवेकी लोगों की भांति आधुनिकता में न बह कर सत्य, वैदिक ज्ञान व विवेक के मार्ग पर चलना होगा अन्यथा आधुनिक जीवन शैली भविष्य में हमारे लिए पश्चाताप का कारण होगी। अत: युवापीढ़ी को अपनी बुद्धि को सत्य व असत्य तथा अच्छे व बुरे का निर्णय करने में समर्थ बनना चाहिये और असत्य को त्याग कर सत्य को ग्रहण करना चाहिये, यही होली पर विचार व चिन्तन करने का एक विषय हो सकता है।

हमारे धर्म व संस्कृति का आधार वेद एवं वैदिक साहित्य है। वेद ईश्वर प्रदत्त ज्ञान है। ईश्वर इस सृष्टि का रचयिता व समस्त प्राणि जगत का उत्पत्तिकर्ता है। वह बड़े से बड़े वैज्ञानिक से अधिक ज्ञानवान, बड़े से बड़े मनुष्य आदि प्राणी से कहीं अधिक बलवान ही नहीं अपितु सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक, सत्य-चित्त -आनन्द स्वरूप, निराकार व सृष्टि का धारण व पोषण-कर्ता है। इसने हमें मनुष्य का जन्म किसी विशेष उद्देश्य व लक्ष्य की पूर्ति के लिये दिया है। हमें उसे जानना है। वह लक्ष्य धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष है। दु:खों से निवृत्ति व आनन्द की प्राप्ति का मार्ग वैदिक ग्रन्थों का अध्ययन-स्वाध्याय, याज्ञिक कार्य व वैदिक जीवन है। धर्म अर्थात् कर्तव्य व वेद विहित कर्म यथा सन्ध्योपासना, अग्निहोत्र, पितृयज्ञ अतिथि- यज्ञ व बलिवैश्वदेव-यज्ञ आदि कर्म हैं। इनका पालन व आचरण ही धर्म है। मनुष्य को अपनी शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक व आत्मिक उन्नति करनी है जो वेदाध्ययन पर जाकर पूरी होती है। इन्हें जानना व इनका पालन करना धर्म होता है। इनको करते हुए धर्म से अर्थ का उपार्जन करना व धर्म व अर्थ से जो सुख की सामग्री प्राप्त हो, उसका वैदिक-मर्यादाओं के अनुसार उपभोग करना, 'काम' है। इनको करते हुए उपासना-योग से ईश्वर का साक्षात्कार होने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है। यहां पहुंच कर जीवन का उद्देश्य पूरा हो जाता है। जीवन का लक्ष्य मोक्ष समीप होता है। यदि इस मार्ग का अनुसरण नहीं करेंगें तो हमारा यह जन्म व परजन्म दोनों दु:खों से पूर्ण व असफल होगें। हमने देखा है कि कोई भी समझदार व्यक्ति किसी अशिक्षित का अनुकरण व अनुसरण कभी नहीं करता, यदि करता है तो वह मूर्ख होता है। परन्तु यहां हम देखते हैं कि जीवनयापन के क्षेत्र में हम मूर्खों का प्राय: अनुकरण करते हैं व कर रहे हैं। हमें जिन लोगों को शिक्षित करना था हमने उनके मूर्खतापूर्ण कार्यों का अपनी कामनाओं की पिपासा को भोग द्वारा शान्त करने के लिए अनुसरण किया। यह हमारी भारी भूल है जिसका सुधार हमें करना होगा अन्यथा इसका असुखद परिणाम कालान्तर में हमारे सामने आयेगा। अत: सत्यासत्य के विवेक में देरी करना हानिकारक है। यहां इतना अवश्य कहना है कि वेद व वैदिक साहित्य में वर्तमान मे मनाई जाने वाली होली का कहीं उल्लेख नहीं मिलता। महर्षि दयानन्द ने भी अपने विस्तृत साहित्य में इस प्रकार की होली का उल्लेख या विधान नहीं किया है, केवल नवसस्येष्टि का ही उल्लेख उन्होंने किया है। पुराणों में भी इस प्रकार की होली का विधान होने का अनुमान नहीं है। पुराणो में एक राजा हिरण्यकशपु, उसकी बहिन होलिका व पुत्र प्रहलाद् की कथा आती है जिसका उद्देश्य ईश्वर की उपासना व भक्ति का सन्देश देना है जिससे लोग ईश्वर भक्ति में प्रवृत्त हों। इस कथा का वर्तमान की होली से कोई सीधा व लाभकारी सम्बन्ध नहीं है।

होली के दिन फाल्गुन मास समाप्त होता है तथा चैत्र मास के कृष्ण पक्ष का आरम्भ होता है। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष से नया वैदिक संवत्सर आरम्भ होता है। हमें लगता है कि होली का पर्व पुराने वर्ष को पूर्णिमा के दिन वृहत अग्निहोत्र-यज्ञ से विदाई देकर चैत्र कृष्ण प्रतिपदा के दिन एक प्रकार से नये वर्ष के स्वागत का पर्व भी है। पौराणिक परम्परा के अनुसार स्वागत के लिए पुष्पों व पुष्प-मालाओं का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार पुष्पा भेंट कर यह दिखाया जाता है कि फूलों की तरह नाना रंगों से विभूषित व सुन्दर तथा उनकी सुगन्धि की महक से स्वयं को सुवासित कर रहे हैं। प्रकृति इस दिन पहले से ही नाना रगों के फूलों

- शेष पृष्ठ 8 पर

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

| | | | |
|---|---|---|---|
| ● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. | प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| ● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. | प्रचारार्थ 50 रु. | |
| ● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियां लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

**विश्व पुस्तक मेला-2014 (15-23 फरवरी) में**

## सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने में सहयोग देने वाले महानुभावों की सूची

**गतांक से आगे-**

| | | | |
|---|---|---|---|
| 18. | श्री जगदीश लाल | 1100 | |
| 19. | श्री सोमदेव मल्होत्रा | 1000 | |
| 20. | श्री हंसराज वर्मा | 100 | |
| 21. | स्त्री आर्यसमाज अशोक विहार, फेज-1, दिल्ली | 2000 | |
| 22. | आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1, दिल्ली | 2000 | |
| 23. | श्री एस.एन. कालरा, | 500 | |
| 24. | श्री एस. सी. सक्सेना | 10000 | |
| 25. | श्री चेतन आर्य | 2000 | |
| 26. | आर्यसमाज मानसरोवर गार्डन | 2000 | |
| 27. | अरुणा सिंह एवं मोहिनी भाटिया | 10000 | |
| 28. | आर्यसमाज रोहिणी सैक्टर-7 | 3000 | |
| 29. | आर्यसमाज मालवीय नगर | 2000 | |
| 30. | गुप्तदान | 200 | |
| 31. | श्रीमती सुनीता गुप्ता | 500 | |
| 32. | श्री ललित मोहन पाण्डेय | 501 | |
| 33. | श्री मनमोहन कुमार आर्य | 251 | |
| 34. | माता कृष्णा | 2500 | |

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारी समस्त दानदाताओं का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। आपके सहयोग से हम 18500 लोगों तक सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10/-रुपये में उलब्ध करा पाने में सक्षम हो सके। आशा करते हैं कि आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में आपका सहयोग भविष्य मे भी सभा को इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।** - *महामन्त्री*

## डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री को राष्ट्रपति सम्मान

विगत गणतन्त्र दिवस के अवसर पर विद्वानों को संस्कृत भाषा में निपुणता एवं पाण्डित्य के लिए राष्ट्रपति ने सम्मानित किया है उनमें आर्यजगत के प्रख्यात विद्वान एवं संस्कृत कवि डॉ. प्रशस्यमित्र शास्त्री का नाम भी है। इसमें सम्मान पत्र के साथ पांचा लाख रुपये की राशि एवं शाल प्रदान कर राष्ट्रपति ने राष्ट्रपति भवन के दरबारहॉल में उनका सम्मान किया।

डॉ. शास्त्री ने एक दर्जन से भी अधिक संस्कृत भाषा में मौलिक लेखन कार्य किया है तथा उन्हें 2009 में उनके कथा संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार भी प्राप्त हो चुका है।

**गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार**
**विद्यालय विभाग (हरिद्वार), उत्तराखण्ड- 249404**

### प्रवेश सूचना

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार द्वारा संचालित आधुनिक सुविधाओं सहित आवासीय विद्यालय (10+2) गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय विभाग हरिद्वार (केवल छात्रों के लिए) एवं कन्या गुरुकुल, 60 राजपुरा रोड, देहरादून (केवल कन्याओं के लिए) में सत्र 2014-15 हेतु कक्षा 1 से 9 तक एवं कक्षा 11 में प्रवेश प्रारम्भ है।

वैदिक संस्कारों पर आधारित दिनचर्या, एन.सी.आर.टी. पाठ्यक्रम, छात्र एवं छात्राओं का सर्वांगीण विकास करने वाली शिक्षण संस्था।

विज्ञान वर्ग में पी.सी.एम. एवं पी.सी.बी. एवं वाणिज्य वर्ग तथा कला वर्ग में अध्ययन की सुविधा। हिन्दी एवं अंग्रेजी माध्यम। विशेष- हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत तीनों भाषाएं अनिवार्य हैं एवं उत्तम संस्कारों हेतु धर्म शिक्षा भी अनिवार्य है।

**प्रवेश अवधि - 20 अप्रैल, 20144 से 20 जुलाई, 2014 तक प्रत्येक रविवार को प्रवेश हेतु प्रवेश परीक्षा होगी।** सम्पर्क करें

**बालकों हेतु** मो.9927016872, 9412025930, 9690679382, 9927084378

**बालिकाओं हेतु** 0135-2748ए334, 9760183502, 9761219696, 9759348510

Website : www.gurukulkangrividyalaya.org

*- जय प्रकाश विद्यालंकार, सहायक मुख्याधिष्ठाता*


**शोक समाचार**

## श्री वेदव्रत मेहता का निधन

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ नई दिल्ली के वर्षों तक प्रधान रहे श्री वेदव्रत मेहता जी का 90 वर्ष की अवस्था में दिनांक 27 फरवरी, 2014 को दोपहर 3:30 बजे हृदय गति रुक जाने के कारण निधन हो गया। वे दयानन्द सेवाश्रम संघ बोकाजान, पूर्वोत्तर भारत के महामन्त्री भी थे। उन्होंने दयानन्द सेवाश्रम संघ के कार्य को सारे देश में फैलाने के लिए अथक परिश्रम किया तथा छात्रावास एवं विद्यालयों की एक लम्बी श्रृंखला खड़ी की। उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ईश्वर रानी मेहता भी उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती रहीं। उन्होंने तीन वर्ष पूर्व अस्वस्थता के चलते संघ से अपना त्यागपत्र देकर महाशय धर्मपाल जी को यह जिम्मेदारी स्वीकार करने का निवेदन किया था जिसे महाशय जी ने स्वीकार किया था। उनके निधन पर समस्त आर्य जनों एवं दयानन्द सेवाश्रम के बच्चों को एक अभूतपूर्व क्षति हुई है।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक**

पृष्ठ 5 का शेष

## केरल में वैदिक संस्कृति की गूंज ....

अपने चप्पल-जूते उतारे हुए थे। रखवाली करने वाला कोई नहीं था, और किसी के जूते चोरी होने का कोई समाचार प्राप्त नहीं हुआ। लोग श्रद्धा से पंक्तिबद्ध होकर यज्ञवेदी तक पहुंचकर सामग्री और घी को समर्पित करते, कुछ-कुछ देर में मलयालम में प्रवचन दिए जा रहे थे। लोग उन्हें श्रद्धा पूर्वक सुनते और आगे बढ़ते। और भी महत्वपूर्ण बात यह कि इन सभी लोगों के लिए नि:शुल्क भोजन की भी व्यवस्था की गई थी। भोजन के लिए जो पण्डाल था उसमें सभी कार्यकर्तागण सेवा दे रहे थे। कोई बड़ी-बड़ी कम्पनियां मैनेज करने के लिए लगी हुई नहीं दिखाई दी। एक ओर धार्मिक पुस्तकों, यज्ञ पात्रों, यज्ञ कुण्ड आदि की दुकानें थीं और साथ में यज्ञों के वैज्ञानिक महत्व को लेकर बहुत बड़ी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था। वैदिक साहित्य, संस्कार विधि, वेद पर अनेक व्याख्याएं, पंचमहायज्ञ, आदि से सम्बन्धित अनेक पुस्तकें मलयालम भाषा में प्रकाशित करके बिक्री हेतु उपलब्ध कराई गई थी।

18 फरवरी की रात्रि काल को हुए कार्यक्रम में आयोजकों की ओर से सार्वदेशिक सभा के सभी अधिकारियों का पारम्परिक सम्मान किया गया। अपने उद्बोधन में बोलते हुए श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि वेद मानव संस्कृति का आधार हैं। यह भूमि कभी वेद के प्रकाण्ड पण्डितों के लिए प्रसिद्ध हुआ करती थी, आज हम यहां जो दृश्य पुन: देख रहे हैं वह हम सबके लिए स्वप्न जैसा है। अतएव मैं मान्यवर आचार्य एम.आर. राजेश जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने केरल में एक वैदिक क्रान्ति का संकल्प लिया और उसे पूरा करके दिखाया। इसके लिए केरल के सभी विश्व विद्यालयों एवं शैक्षणिक स्थलो पर महर्षि दयानन्दकृत वेद भाष्य का अंग्रेजी अनुवाद स्थापित किया जाएगा। हम इस यज्ञ में अधिक से अधिक आहुति देने का प्रयत्न करेंगे। उन्होंने इस अवसर पर 5 लाख रुपये का सहयोग देने की भी घोषणा की।

महाशय धर्मपाल जी ने अपने उद्बोधन में इस पूरे आयोजन को अपने जीवन के लिए एक उपलब्धि बताते हुए कहा कि आचार्य एम.आर. राजेश जी एवं उनके सभी कार्यकर्तागण जिन्होंने इस कार्य को सम्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है उनके लिए मैं नतमस्तक हूं और जो भी मुझ से बन पड़ेगा, मैं केरल में वेद के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करूंगा। इसी अवसर पर उन्होंने केरल में वैदिक संस्कृति के उत्थान व वेदों पर शोध के लिए उन्होने वेद रिसर्च फांउडेशन खोलने की भी घोषणा की, जिस पर लगभग ढाई करोड़ रुपये की लागत आने का अनुमान है। इस प्रस्तावित "महाशय धर्मपाल एम. डी. एच. वेद रिसर्च फांउडेशन" के लिए भूमि चिन्हित कर ली गई है जिसका शीघ्र ही शिलान्यास कर कार्य आरम्भ कर दिया जाएगा।

वहीं आचार्य एम. आर. राजेश ने यज्ञ एवं मानव जीवन के उद्देश्यों पर विस्तारपूर्वक व्याख्या की। उन्होंने कहा कि मानव जीवन की सफलता पंच महायज्ञ, वेद और गायत्री जाप पर ही निर्भर करती है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में यज्ञ को अवश्य ही अपनाना चाहिये इससे न केवल व्यक्ति विशेष को लाभ होता है अपितु वह अपने आस-पास के वातावरण को भी लाभान्वित करता है।

## कन्या गुरुकुल नजीबाबाद की शिक्षा एवं क्रीड़ा जगत् की उपलब्धियाँ

आर्ष कन्या गुरुकुल विद्यापीठ नजीबाबाद की तीन मेधाविनी छात्राओं कु. कल्पना, कु. उपासना, कु. श्रद्धा (ऋतिका) नें जे.आर.एफ. उत्तीर्णकर कीर्तिमान बनाया तथा कु. सुशीला, कु. मनीक्षा, कु. प्रतिज्ञा, कु. इडा शास्त्री ने नेट राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा उत्तीर्ण की। इसके अतिरिक्त कु. स्नेहा ने गत वर्ष कु. मृणालिनी ने इस वर्ष शास्त्री परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय से स्वर्ण पदक प्राप्त किये।

खेल जगत् की उपलब्धियाँ इस प्रकार है- आत्मसुरक्षा की विधा ताईक्वाण्डों में अनेक जनपदीय व राज्यस्तरीय टूर्नामण्टों में भाग लेकर इस गुरूकुल की कन्याएँ अब तक 60 स्वर्ण, 70 रजत, 72 कांस्य पदक प्राप्त कर चुकी हैं। अभी हाल में ही कु. अपाला, कु. सूर्या, कु. संयोगिता, कु. रचना ने स्वर्ण पदक तथा कु. माधवी, कु. कल्पना ने कांस्य पदक प्राप्त कर गुरुकुल की श्रीवृद्धि की है। इस प्रतियोगिता फैडरेशन ऑल इण्डिया ताईक्वाण्डों चैम्पियनशिप के तत्वावधान में चण्डीगढ़ में सम्पन्न हुई।

*- डॉ. प्रियम्वदा वेदभारती, आचार्या*

## वैदिक विरक्त सम्मेलन

वैदिक मिशन मुम्बई द्वारा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के सौजन्य से आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में दिनांक 22 से 23 मार्च 2014 को 'वैदिक विरक्त सम्मेलन'' कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस द्विदिवसीय सम्मेलन में ऋषि दयानन्द के व्यक्तित्व एवं उनकी बृहत् त्रयी-सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका एवं संस्कार विधि में वर्णित विषयों की महत्ता, उपयोगिता और उनके प्रचार-प्रसार के विविध उपायों के विषय में गहन चिन्तन किया जाएगा।

*- सन्दीप आर्य, मन्त्री*

**आर्यसमाज टाउन हॉल शाहजहांपुर का**

## 137वां वार्षिकोत्सव

11-13 अप्रैल, 2014

यज्ञ-भजन-प्रवचन: प्रात: 6.30-10 बजे

विद्वान : स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती
डॉ. निष्ठा विद्यालंकार
पं. प्रभात कुमार आर्य

आप सब सादर आमन्त्रित हैं।

*- ओम प्रकाश, प्रधान*

# साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 10 मार्च, 2014 से रविवार 16 मार्च, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 13/14 मार्च, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 12 मार्च, 2014


पृष्ठ 4 का शेष

के इस अवसर पर एस पी सिंह को 'श्री सुरेश ग्रोवर आर्य वैदिक विद्वान पुरस्कार', श्रीमती सरोज यादव को 'मुमुक्षु आर्य माता विद्यावती महिला पुरस्कार तथा रामचन्द्र शास्त्री को 'माता छजियादेवी आर्य वैदिक विद्वान पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर स्वामी धर्ममुनि जी ने आशीर्वाद दिया। आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के महामन्त्री राजीव आर्य, उपप्रधान सुरेन्द्र कुमार रैली, धर्मपाल आर्य, महामन्त्री विनय आर्य, गंगाशरण आर्य ने भी स्वामी दयानन्द बोधोत्सव पर प्रेरणादायी विचार रखें। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा को मानव विकास का पहला चरण कहा है। इसी विचार से प्रेरित होकर ऐसे क्षेत्र विशेषकर आदिवासी इलाके जहां शिक्षा आज भी एक सपने की तरह है, वहां आर्य समाज नये विद्यालय खोलकर शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिये प्रतिबद्ध है। साथ ही आर्य समाज ऐसे हर उस विधेयक का विरोध करता है जो भारत की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिये घातक है।

कार्यक्रम की जानकारी देते हुए मीडिया प्रबन्धक राहुल आर्य ने बताया कि प्रत्येक वर्ष स्वामी जी का बोधोत्सव विभिन्न आर्य समाजों, गुरुकुलों, डी.ए.वी. स्कूलों तथा अनेक सामाजिक एवं शिक्षण संस्थाओं द्वारा भारत ही नहीं अपितु विश्व भर में आयोजित किया जाता है। आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली के इस कार्यक्रम में फरीदाबाद से आए बलराम आर्य ने मधुर भजनों व बच्चों ने गीतों की प्रस्तुतियां दी। इस अवसर पर गणमान्य आर्यनेताओं, विद्वानों सहित हजारों की संख्या में आर्यजन उपस्थित थे।

पृष्ठ 6 का शेष

से सज-धज कर चैत्र मास के स्वागत के लिए तैयार होती है। वायुमण्डल व मौसम भी अपनी शीतलता को कम कर देता है। इस दिन, यदि वर्षा आदि न हो, तो बहुत सुहावना व अनुकूल मौसम होता है। लगता है कि प्रकृति अपने रंग-बिरंगे फूलों व उनकी सुगन्ध से नये वर्ष के प्रथम महीने चैत्र का स्वागत कर रही है। हम यज्ञ से वातावरण में सुगन्ध उत्पन्न करते हैं तो प्रकृति भी पुष्पों की सुगन्ध से वातावरण को सुवासित करती है। यह प्रकृति का स्वयं का सृष्टि-यज्ञ है। इसी का प्रतीक हमारा यज्ञ भी होता है। हमारा जीवन उत्साह, उमंग, जोश, विवेक, ज्ञान, उपासना, अग्निहोत्र यज्ञ, आत्म-कल्याण की भावना, वेदों के प्रचार की कामना व भावना, सत्य के प्रति आग्रह का स्वभाव आदि से भरा होनी चाहिये। यही इस पर्व से द्योतित होता लगता है। इस अवसर पर हमारी सबको शुभकामनायें।


*– मनमोहन कुमार आर्य*

*196 चुक्खूवाला-2, देहरादून-1*

*(उत्तराखण्ड) मो. 09412985121*



**विक्रमी नव वर्ष आर्यसमाज स्थापना दिवस शुभकामना कार्ड**

**मूल्य 700/-रुपये सैंकड़ा लिफाफे सहित**

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
23365959; 09540040339


*प्रतिष्ठा में,*

**सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा** के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर